अनोखी होरी श्याम की ...

ओ सजनी कैसे खेली जाय, अनोखी होरी श्याम की ।
अनोखी होरी श्याम की, सखी बरजोरी श्याम की ।।

या होरी में खोय गई मेरी पायल पाँव की ।
अबही तो मैं नई कराई बहुतै दाम की ।।1।। ओ सजनी ...

धूम सही ना जाय सखी या आठों याम की ।
रंग डारैं और छाप लगावैं अपने नाम की ।।2।। ओ सजनी ...

रीत बुरी है बहुत बुरी बरसाने गाम की ।
लट्ठ चलावैं नैन चलावैं ऊंचो गाम की ।।3।। ओ सजनी ...

यह होरी है अजर-अमर गोवर्धन धाम की ।
मित्र मण्डली खुशी रहै नित 'घासीराम' की ।।4।। ओ सजनी ...

http://www.govindbhargav.in